शुष्क मरुप्रदेश की प्रमुख घासें

उष्ट्र पालन में उपयोगिता व महत्व

(नेटवर्क प्रोजेक्ट)

प्रधान अन्वेषक : डॉ. एम.एस. साहनी

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

जोरबीड़, बीकानेर-334 001(राज.)

शुष्क मरूप्रदेश की प्रमुख घासें

उष्ट्र पालन में उपयोगिता एवं महत्व

(नेटवर्क प्रोजेक्ट)

आलेख :

बलदेव दास किराडू
राजा पुरोहित
राम कुमार
डॉ. एम.एस.साहनी
निर्मला सैनी
नेमीचन्द

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

जोरबीड़, बीकानेर - 334 001 (राज०)

क्रमांक

1. सेवण 1
2. ग्रामणा 2
3. गंठिया 4

प्राचीन समय से प्रकृति प्रदत् कुछ ऐसी घासें होती है जो चारे के रूप में पशुओं हेतु उपयोग में ले सकते हैं। इनमें प्रोटीन और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों की उत्तम मात्रा भी विद्यमान होती है। इन घासों को हम चारा घास के नाम से जानते हैं। प्रायः हरे चारे व सूखे चारे की भारी कमी के दौरान ये चारा घासें, बहुत उपयोगी रहती है। शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में प्रमुख चारा घासें – सेवण, ग्रामणा व गंठिया इत्यादी होती है, जिनकी बढ़वार अलग–अलग प्रकार की होती है। विभिन्न प्रजाति की घासों की चारा उत्पादन की क्षमता, कटाई की मात्रा, समय–अन्तराल पर निर्भर करती है।

शुष्क मरुप्रदेश की प्रमुख घासे
उष्ट्र पालन में उपयोगिता व महत्व

सेवण -(लेसिरीयस सिन्डीकस) :-

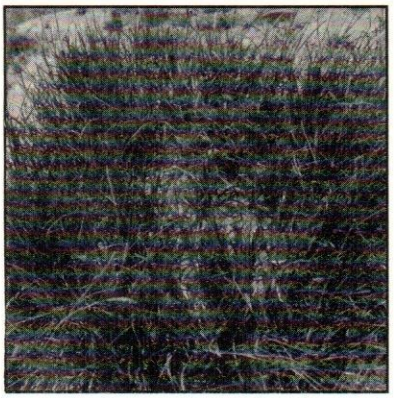

शुष्क क्षेत्रों में जहां वार्षिक वर्षा 100 मिलीलीटर से 350 मिलीलीटर तक होती है वहां पाई जाने वाली यह एक महत्त्वपूर्ण घास है, मुख्यतौर पर यह राजस्थान, हरियाणा, गुजरात के शुष्क रेतीली भूमि पर पायी जाती है। राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों – जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, चुरू जिलों में यह घास अधिक पायी जाती है। वर्षा ऋतु में सेवण घास की औसत ऊँचाइ 0.5 से 1.5 मीटर तक पहुँच जाती है। उस समय इसकी पत्तियों की लम्बाई 30 से 45 सेन्टीमीटर तक होती है।

चारे के रूप में:- सेवण घास गायों के लिये सबसे उपयुक्त व पौष्टिक घास है। इस घास को प्रारम्भिक अवस्था में गाय, भैंस, ऊँट इत्यादि जानवर बड़े चाव से खाते हैं। सेवण घास के चारागाह से प्रति हेक्टअर 30-35 क्विंटल सूखा चारा प्राप्त किया जा सकता है। परिपक्व अवस्था आने पर इसका तना सख्त हो जाता है, तब इसे पशु कम खाते हैं तथा परिपक्व घास में गुणवता व पाचकता की भी कमी आ जाती है। सेवण घास में प्रोटीन की मात्रा विभिन्न अवस्थाओं में अलग–अलग पाई जाती है। यह करीब 6-14 प्रतिशत के मध्य तक होती है तथा प्रारम्भिक अवस्था में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है। आमतौर पर शुष्क क्षेत्रों में सेवण घास सूखे चारे के रूप में, जिसे सेवण की कुत्तर कहते हैं, गायों व भैंसों को प्रमुख रूप से खिलाने के काम में लाई जाती है। ऊँट इसे कच्ची अवस्था में खाना अधिक पसन्द करते हैं। अक्टूबर के पश्चात् इसका तना सख्त हो जाता है और घास की परिपक्व अवस्था प्रारम्भ हो जाती है, तब ऊँट इसे खाना कम पसन्द करते हैं।

चराई अनुसंधान के अन्तर्गत सेवण घास के चारागाह में ऊँटों द्वारा वर्षा ऋतु में जुलाई से अक्टूबर तक चरने की प्राथमिकता :–

महीनें	सेवण (प्रतिशत)	अन्य घासें (प्रतिशत)
जुलाई–	65.0	35.0
अगस्त–	72.0	28.0
सितम्बर–	60.0	40.0
अक्टूबर–	55.0	45.0

सेवण घास का रसायनिक संघटन (प्रतिशत):-

शुष्क पदार्थ–	30.0 - 50.0
अशुद्ध प्रोटीन–	6.0 - 14.0
अशुद्ध रेशेदार तन्तु–	30.0 -33.0
कुल राख–	5.0 - 9.0

इसका चारागाह कई वर्षों तक रहता है व यह भूमि के कटाव को रोकने में सहायक है, लेकिन पिछले कुछ वर्षो में बरानी खेती में मशीनों व खेती के उपकरणों की उपयोगिता में बढ़ोतरी से इस क्षेत्र में सेवन घास के उत्पादन व क्षेत्र में लगातार कमी आई है, जिससे पशुपालन व्यवसाय को बहुत हानि हो रही है।

सेवण घास का रोपण वर्षा ऋतु में किया जाता है। उस समय यह बहुत अधिक मात्र में फैलती है और वृद्धि करती हैं। वर्ष के अन्य महीनों (फरवरी–मार्च में) भी इसका रोपण किया जा सकता है और थोड़े समय में इसकी अधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

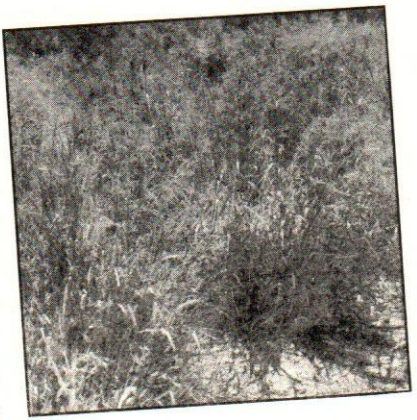

ग्रामणा-(पेनिकम ऐन्टिडोटेल):- यह बलुई मिट्टी से लेकर चिकनी मिट्टी वाले क्षेत्रें में, जहां वार्षिक वर्षा 200-900 मिलीलीटर तक होती है, वहां यह घास बहुतायत में पायी जाती है। इस घास की ऊंचाई 1.25 से 1.50 मीटर तक होती है।

चारे के रूप में :-ग्रामणा घास के चारागाह से प्रति हैक्टेयर 40 - 70 क्विंटल सूखा चारा लिया जा सकता है। ऊँट एवं अन्य पशु इसको, कच्ची अवस्था में बड़े चाव से खाते हैं। परिपक्व अवस्था में इसका तना काफी सख्त हो जाने के कारण इसे ऊँट एवं अन्य पशु नहीं खाते हैं। इसकी वृद्धि की विभिन्न अवस्थाओं में प्रोटीन की मात्र 5 - 13 प्रतिशत तक होती है। ग्रामणा घास में अन्य घासों की तुलना में आक्सेलिक अम्ल अधिक पाया जाता है, जो पशुओं के लिये हानिकारक होता है। लम्बे समय तक ग्रामणा घास पशुओं को खिलाने से उनके शरीर में कैल्शियम की कमी आ जाती है। दलहन चारों में कैल्शियम की अधिकता होती है। अतः ग्रामणा को दलहन चारों के साथ मिलाकर खिलानी चाहिये।

चराई अनुसंधान में यह देखा गया है कि ग्रामणा घास के चारागाह में वर्षा ऋतु में जुलाई से सितम्बर माह तक ऊँट इसको कच्ची अवस्था में चरते हैं।

महीनें	**ग्रामणा (प्रतिशत)**	**अन्य घासें (प्रतिशत)**
जुलाई–	50-58	35-42
अगस्त–	60-70	25-30
सितम्बर–	65-70	25-40

ग्रामणा घास का रसायनिक संघटन (प्रतिशत):-

शुष्क पदार्थ–	30.0 - 50.0
अशुद्ध प्रोटीन–	6.0 - 14.0
अशुद्ध रेशेदार तन्तु–	30.0 - 33.0
कुल राख–	5.0 - 9.0

ऊँटों व अन्य पशुओं को इस घास को काटकर भी खिलाया जा सकता है। वर्षा ऋतु में इस घास का चारागाह, विकास के लिए/ उपयुक्त माना जाता है।

ग्रामणा घास का रोपण का उचित समय वर्षा ऋतु ही है। जुलाई अगस्त माह में इस घास का रोपण करने पर यह बहुत अधिक मात्रा में वृद्धि करके फैलती है। फरवरी–मार्च के महीनों को भी इसके रोपण के लिये उपयुक्त माना गया है।

गंठिया-

(डेक्टाइलोनीयम इजीप्टीयम):-

यह शुष्क मरु क्षेत्र में वर्षा ऋतु में उगने वाली प्रमुख मौसमी घास है। वर्षा ऋतु में यह बहुतायत में पाई जाती है। सभी पशु इसे बड़े चाव से चर लेते हैं। विकसित जड़तन्त्र वाली यह घास काफी फैलाव लिये होती है। भूमि पर इसकी शाखायें एक–दूसरे से जुड़ती हुई समानान्तर फैलती हैं। ऊँट इसे बड़े चाव से खाता है। वर्षा ऋतु के पश्चात् जब यह कम होकर धीरे–धीरे सूखने लगती है, तो उस दौरान भी भेड़ व ऊँट इसे थोड़ा–थोड़ा खाते रहते हैं। गंठिया घास एक बार किसी क्षेत्र में लगने के उपरान्त कई वर्षों तक जमीन में रहकर फैलती रहती है। वर्ष भर यह सूखी अवस्था में रहते हुए भी वर्षा ऋतु के आने पर यह घास फिर से हरी हो जाती है तथा काफी मात्र में फैलती है।

इसका रसायनिक संघटन (प्रतिशत) :-

शुष्क पदार्थ–	25.0 - 30.0
अशुद्ध प्रोटीन–	6.0 - 10.0
अशुद्ध रशेदार तन्तु–	20.0 - 23.0
कुल राख–	16.0 - 20.0

चराई अनुसंधान के दौरान यह देखा गया है कि वर्ष के विभिन्न महीनों में ऊँटों द्वारा गंठिया घास को चरने की प्राथमिकता इस प्रकार है:–

महिनें	**प्रतिशत**
जुलाई	10-15
अगस्त	11-14
सितम्बर	11-16
अक्टूबर	15-20
नवम्बर	10-20

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

❖ प्रकाशक :

डॉ. एम.एस.साहनी
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोरबीड़ बीकानेर-334001(राज.)

❖ प्रकाशन :

मार्च-2003

❖ मुद्रक :

आर.जी. एसोसिएट्स
बीकानेर
फोन : 0151-2527323